IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, July 2023

शैक्षणिक चिन्ता के सन्दर्भ में हरदोई जनपद में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

Dr. Surendra Pratap
Associate Professor
Department of Education
Maharana Pratap Government Degree College, Hardoi, U.P., India

व्यक्ति के व्यवहारो की वे विशेषताएं जो विभिन्न परिस्थितियों में प्रकट होती है, शीलगुण कहलाती है। प्रत्येक शीलगुण भिन्न – भिन्न व्यक्तियों में भिन्न – भिन्न मात्रा में पाया जाता है। चिन्ता एक ऐसा शीलगुण है जो प्रत्येक व्यक्ति में कम या अधिक पाया जाता है। चिन्ता किसी दुर्घटना की आशंका से उत्पन्न भय की प्रतिक्रिया है जो व्यक्ति की मानसिक शक्ति को कम कर देती है। चिन्ता भय या आशंका के कारण उत्पन्न होती है। छात्रों के द्वारा अनुभव किया जाने वाला असफलता का भय शैक्षणिक चिन्ता है जिसके कारण छात्र विद्यालय में सम्प्राति के उचित मानक को प्राप्त नहीं कर पाता है। (पाण्डेय , 1985) । संवेगात्मक बुद्धि अनुभूति के साथ चिन्तन को जोड़ती है। केरूसो (1999) के विचारों से स्पश्ट है कि संवेगात्मक बुद्धि से व्यक्ति अपने व दूसरों के संवेगो को समझने व उनका प्रबन्धन करने में सक्षम होता है व अपने संवेगों को विचारशील तरीके से प्रदर्शित करता है। इससे ध्वनित होता है। कि शैक्षणिक चिन्ता संवेगात्मक बुद्धि को प्रभाविक कर सकती है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार है:

1. उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियो की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता और उनकी संवेगात्मक बुद्धि में सम्बन्ध ज्ञात करना ।

परिकल्पनाएं:

1. उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई उन्तर नहीं होता है।
2. विद्यार्थियो की शैक्षणिक चिन्ता व उनकी संवेगात्मक बुद्धि में कोई सहसम्बन्ध नहीं होता है।

अध्ययन विधि:

प्रतिदर्श: प्रतिदर्श के रूप में हरदोई जनपद के दो माध्यमिक विद्यालयो की कक्षा 11 में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया ।

उपकरण: प्रदत्त संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण निम्नलिखित है :–

1. कल्पलता पाण्डेय द्वारा निर्मित शेक्षणिक चिन्ता मापनी
2. के0 एस0 मिश्र द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (विद्यार्थी प्रारूप)

प्रदत्त संग्रह : सर्वप्रथम चयनित विद्यार्थियों से अध्ययन में सम्मिलित चरों से सम्बन्धित प्रदत्तो को संकलित किया गया । उच्च व निम्न शेक्षणिक चिन्ता अंको के प्रथम (=5) व तृतीय चतुर्थाक (=15) की गणना की गई । जिन विद्यार्थियों के अंक 15 या इससे सहायक प्रोफेसर बी0एड0 विभाग म0 प्र0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदोई (उ0प्र0)
अधिक थे उन्हे उच्च समूह में रखा गया जबकि निम्न समूह में उन विद्यार्थियो को रखा गया जिनके अंक 5 या इससे कम थे।

प्रदत्त विश्लेषण व निर्वचन:

उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता समूह वाले विद्यार्थियों क संवेगात्मक बुद्धि अंको के मध्यमानो की तुलना हेतु टी – अनुपात की गणना की गई । शेक्षणिक चिन्ता व उनकी संवेगात्मक बुद्धि में सह – सम्बन्ध ज्ञात करने लिए गुणनफल आधूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक की गणना की गई ।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, July 2023

सारिणी – 1

उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता समूह वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि अंको में अन्तर ज्ञात करने हेतु किये गये टी – परीक्षण का सार

शैक्षणिक चिन्ता समूह	एन	मध्यमान	म0वि0	'टी' अनुपात
उच्च	34	17.61	4.82	3.52
निम्न	38	21.84	5.26	

***01 स्तर पर सार्थक**

सारिणी – 1 से स्पष्ट है कि टी – अनुपात का मान 3.52 है जो .01 स्तर पर सार्थक है (स्वतंत्रयांश = 70)। अतः यह परकिल्पना कि उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक उन्तर नहीं होता है। अस्वीकार्य है। इससे या निष्कर्ष निकलता है कि उच्च व निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में उन्तर होता है। उच्च शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियो की तुलना में (मध्यमान =17.61) निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों (मध्यमान = 21.84) की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है।

सरिणी – 2

विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता और उनकी संवेगात्मक बुद्धि में सहसम्बन्ध

आश्रित चर	सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर
संवेगात्मक बुद्धि	–.3371	.01

सारिणी – 2 से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता व संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का मान –.3371 है जो .01 स्तर पर सार्थक है (स्वतंत्रयांश= 118)। अतः यह परिकल्पना कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता व उनकी संवेगात्मक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध नहीं होता है। अस्वीकार्य है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता व संवेगात्मक बुद्धि में ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है।

प्रदत्तो के सांख्यिकीय विश्लेषणोपरान्त यह विष्कर्ष निकलता है कि उच्च शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की तुलना में निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि अधिक होती है। निम्न शैक्षणिक चिन्ता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च शैक्षणिक चिंता वाले विद्यार्थियों की सवेगात्मक बुद्धि का कम होना इस तत्थ्य को प्रकट करता है कि उच्च शैक्षणिक चिंता वाले विद्यार्थियों में अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा विद्यालय में अपने निष्पादन को उचित मानक के अनुरूप बनाये न रख पाने का भय निरन्तर बना रहता है। फलस्वरूप इनमें शैक्षणिक चिन्ता का स्तर उच्च होता जाता है। जो उनकी संवेगात्मक बुद्धि के विकास में अवरोध उत्पन्न करता है। विद्याथियों की शैक्षणिक चिन्ता व संवेगात्मक बुद्धि में ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है। इससे सपष्ट है कि विद्यार्थियों में व्याप्त शैक्षणिक चिन्ता उनकी संवेगात्मक बुद्धि के विकास को अवरूद्ध करती है।

यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों के लिए शिक्षण की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए । जिसमें वे खुलकर अपने संवेगों की अभिव्यक्ति कर सकें और उनके मन में शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति व्याप्त भय व चिन्ताएं दूर हो सकें। विद्यार्थियों को अपने संवेगो की अभिव्यक्ति के लिए प्रोत्साहित किया जाना । चाहिए और इसके लिए इनहें अवसर प्रदान यिा जाना चाहिए जिससे उनकी झिझक समाप्त हो सके। शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता में कमी करने का प्रयास जरूरी है ताकि उनकी संवेगात्मक बुद्धि का विकास हो सकें।

सन्दर्भः

[1]. **केरूसो डेविड आर0 (1999)**, एप्लाइंग द एबिलिटी मॉडल ऑव इमोशनल इण्टेलिजेंस टू द वर्ल्ड ऑव वर्क सिम्सबरी , चार्ल्स जे0 वोल्फ एसोसिएट्स , एल0 एल0 सी0।
[2]. **पाण्डेय , कल्पलता (1985)**,मैनुअल फार एकेडेमिक एंग्जाइटी वाराणसी रूपा सायकोसेण्टर।